एकलव्य का प्रकाशन

गीत का कमाल

एक बुन्देलखण्डी लोक-कथा

चित्रांकन: जितेन्द्र ठाकुर

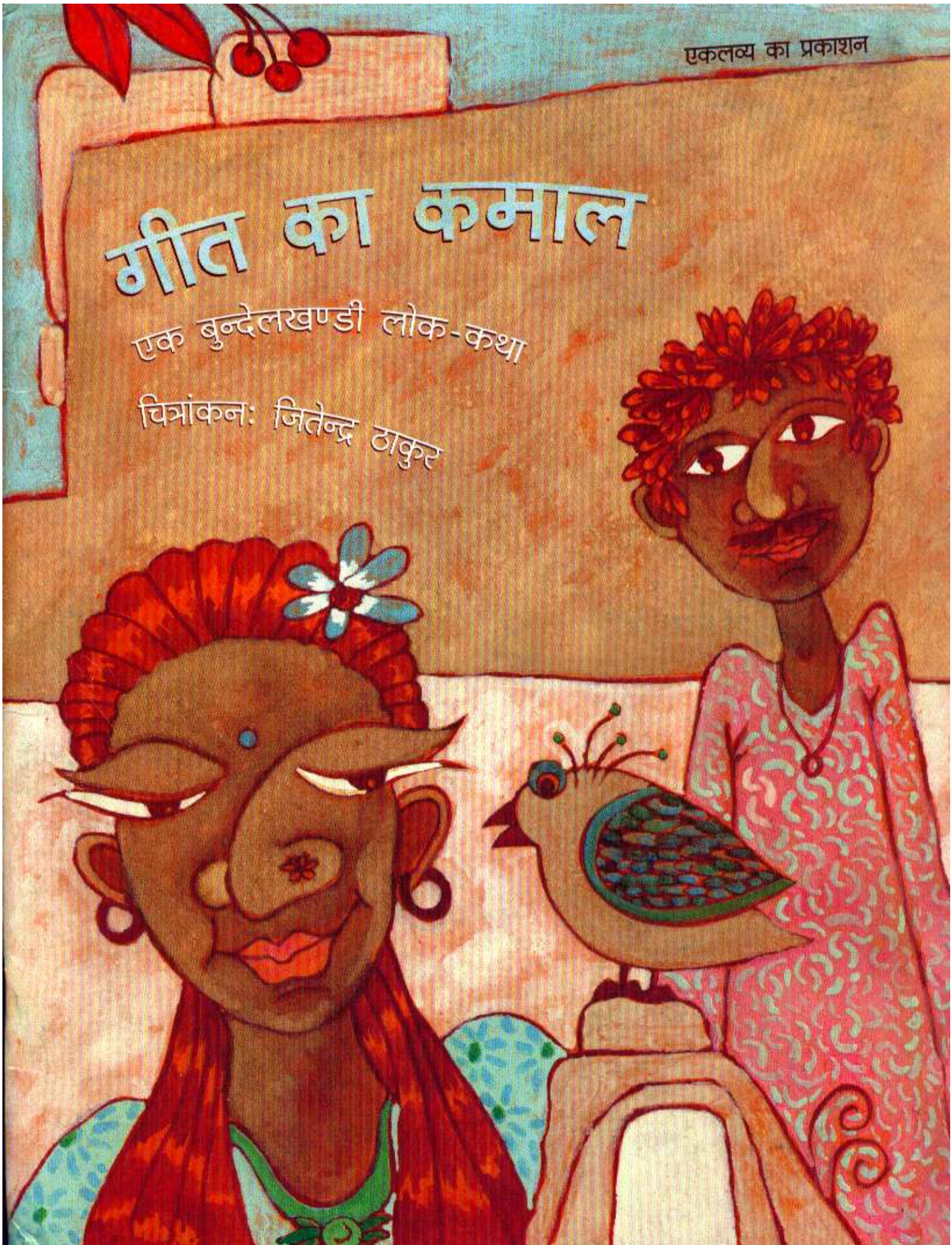

गीत का कमाल

एक बुन्देलखण्डी लोक-कथा

चित्रांकन: जितेन्द्र ठाकुर

एकलव्य का प्रकाशन

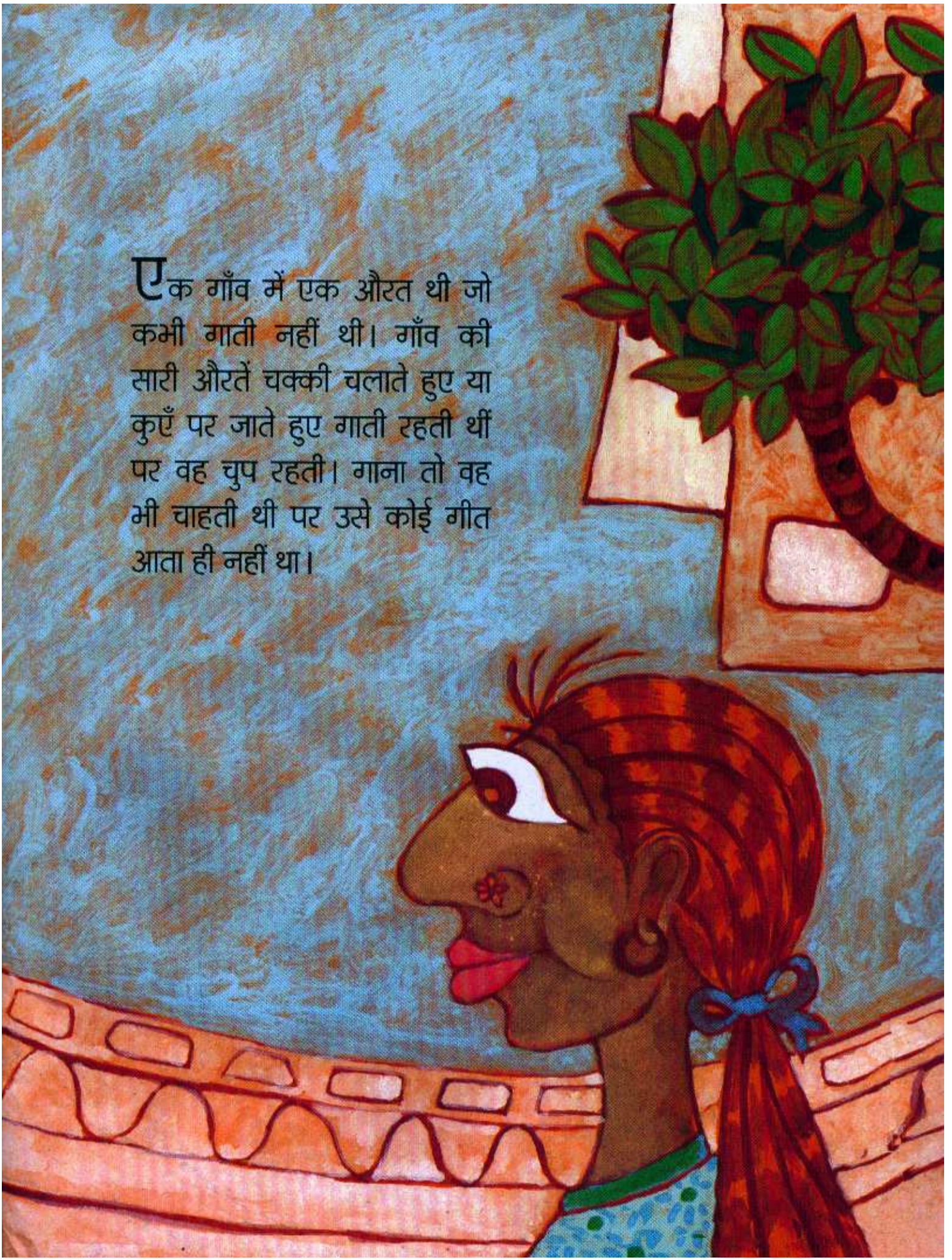

एक गाँव में एक औरत थी जो कभी गाती नहीं थी। गाँव की सारी औरतें चक्की चलाते हुए या कुएँ पर जाते हुए गाती रहती थीं पर वह चुप रहती। गाना तो वह भी चाहती थी पर उसे कोई गीत आता ही नहीं था।

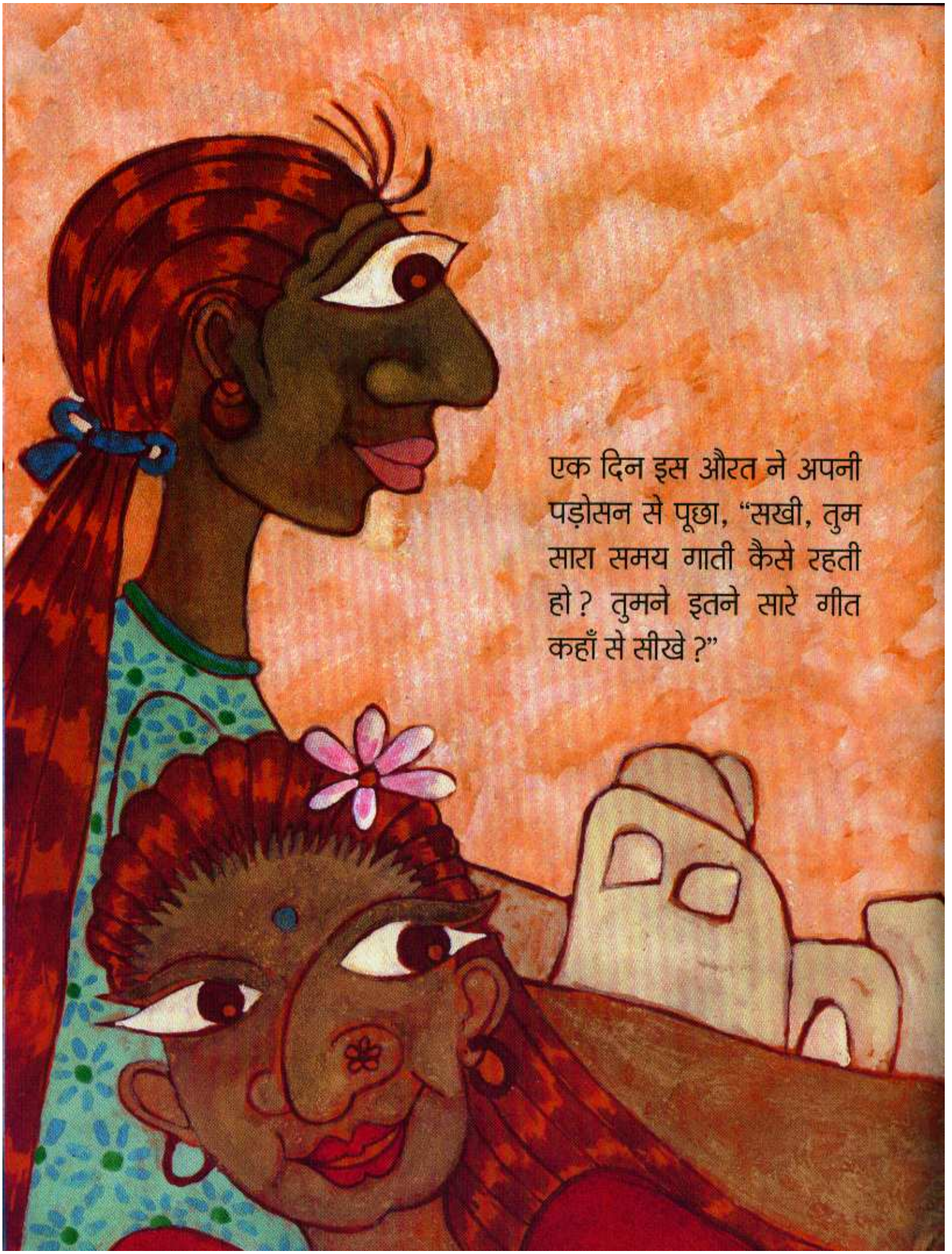

एक दिन इस औरत ने अपनी पड़ोसन से पूछा, "सखी, तुम सारा समय गाती कैसे रहती हो? तुमने इतने सारे गीत कहाँ से सीखे?"

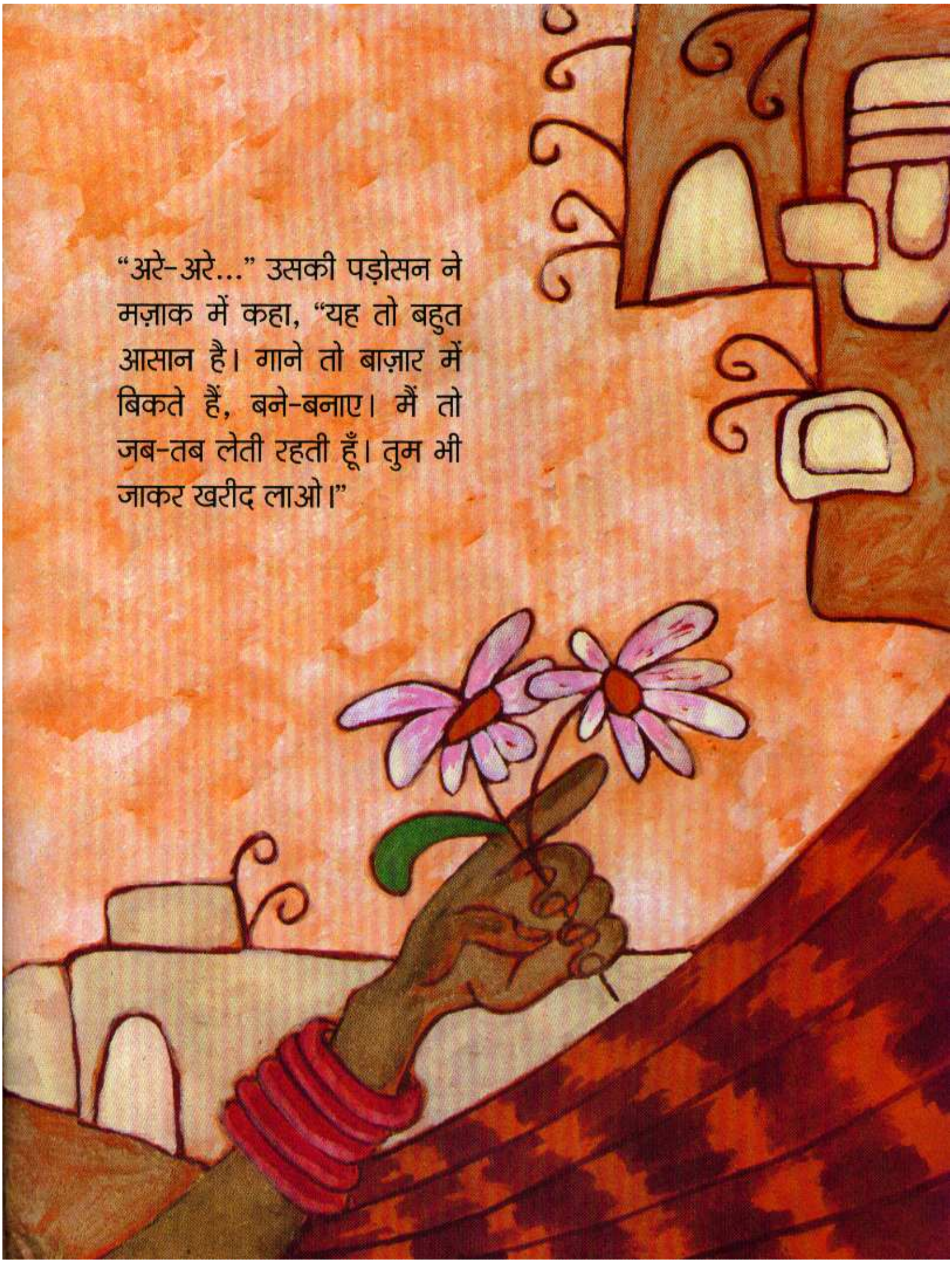

"अरे-अरे..." उसकी पड़ोसन ने मज़ाक में कहा, "यह तो बहुत आसान है। गाने तो बाज़ार में बिकते हैं, बने-बनाए। मैं तो जब-तब लेती रहती हूँ। तुम भी जाकर खरीद लाओ।"

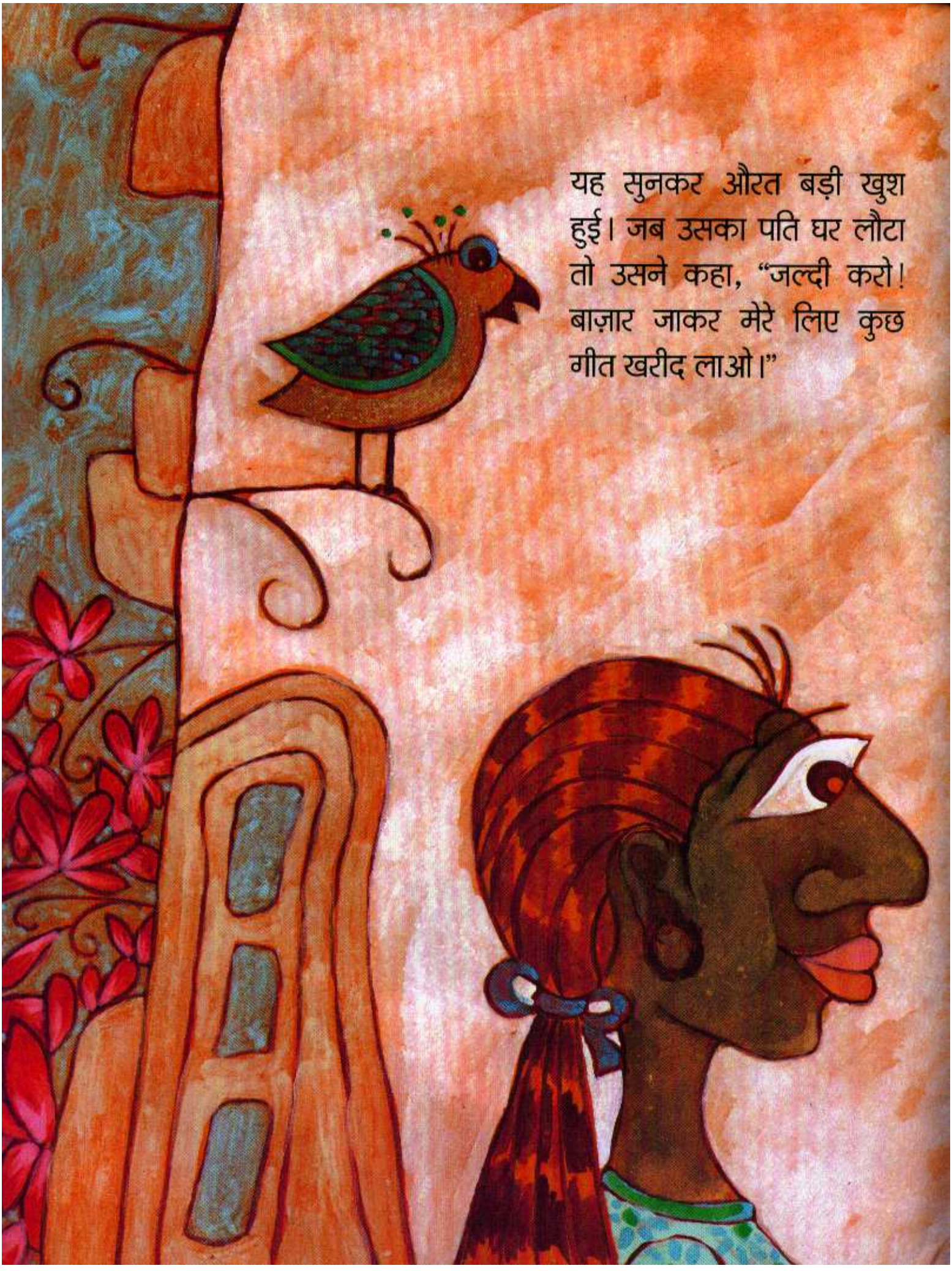

यह सुनकर औरत बड़ी खुश हुई। जब उसका पति घर लौटा तो उसने कहा, "जल्दी करो! बाज़ार जाकर मेरे लिए कुछ गीत खरीद लाओ।"

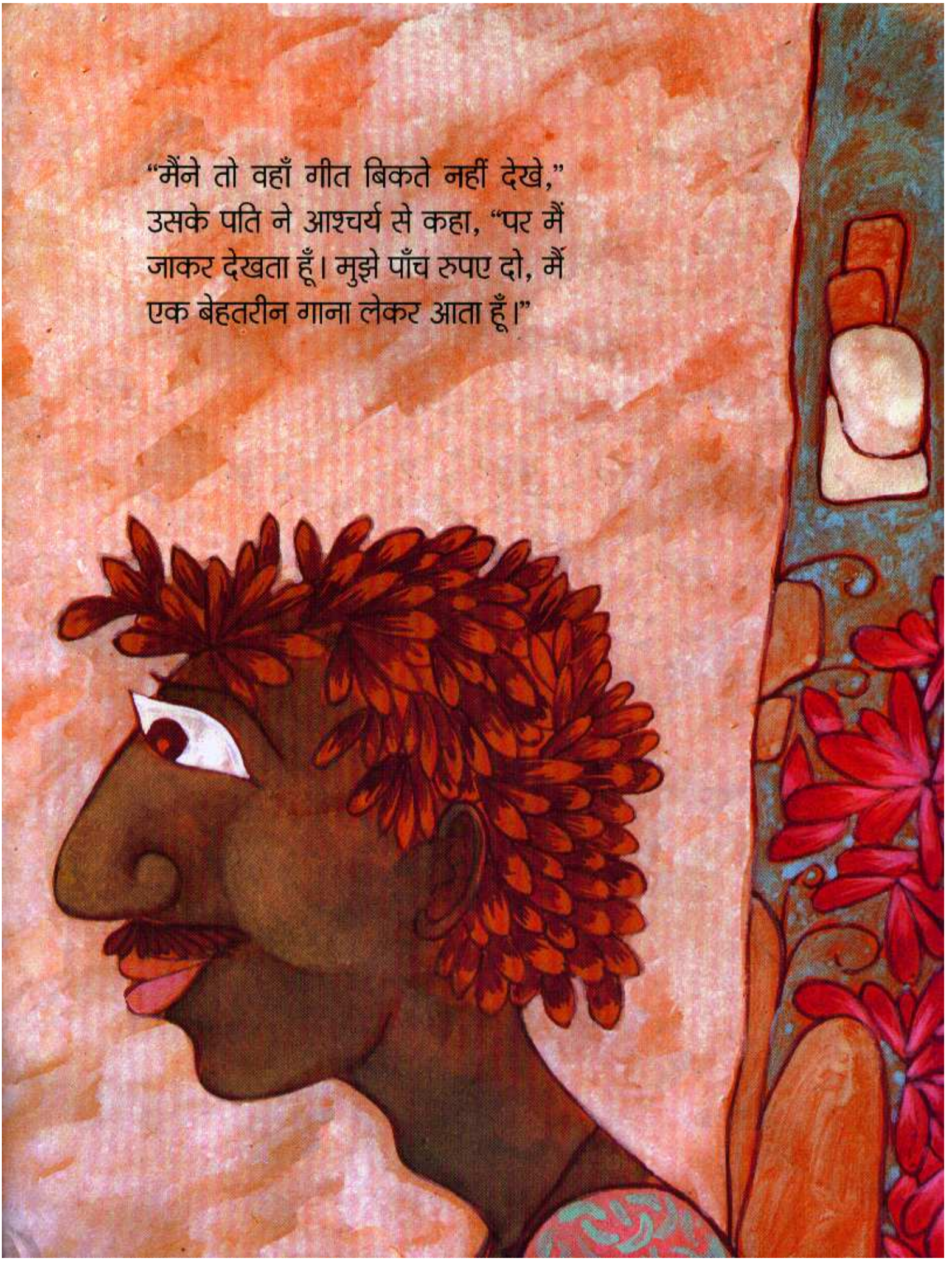

"मैंने तो वहाँ गीत बिकते नहीं देखे," उसके पति ने आश्चर्य से कहा, "पर मैं जाकर देखता हूँ। मुझे पाँच रुपए दो, मैं एक बेहतरीन गाना लेकर आता हूँ।"

वह पैदल-पैदल बाज़ार चला और सबसे पहली दुकान पर जा पहुँचा। वहाँ अनाज बिकता था। उसने दुकानदार की तरफ पैसे बढ़ाए और कहा, "एक बढ़िया-सा गीत देना भाई।"

दुकानदार ने मसखरी से अपने बेटे को आँख मारी और कहा, "ओहो! मेरे तो सारे गीत बिक गए। ऐसा करो, सब्ज़ीवाले के पास देख लो।"

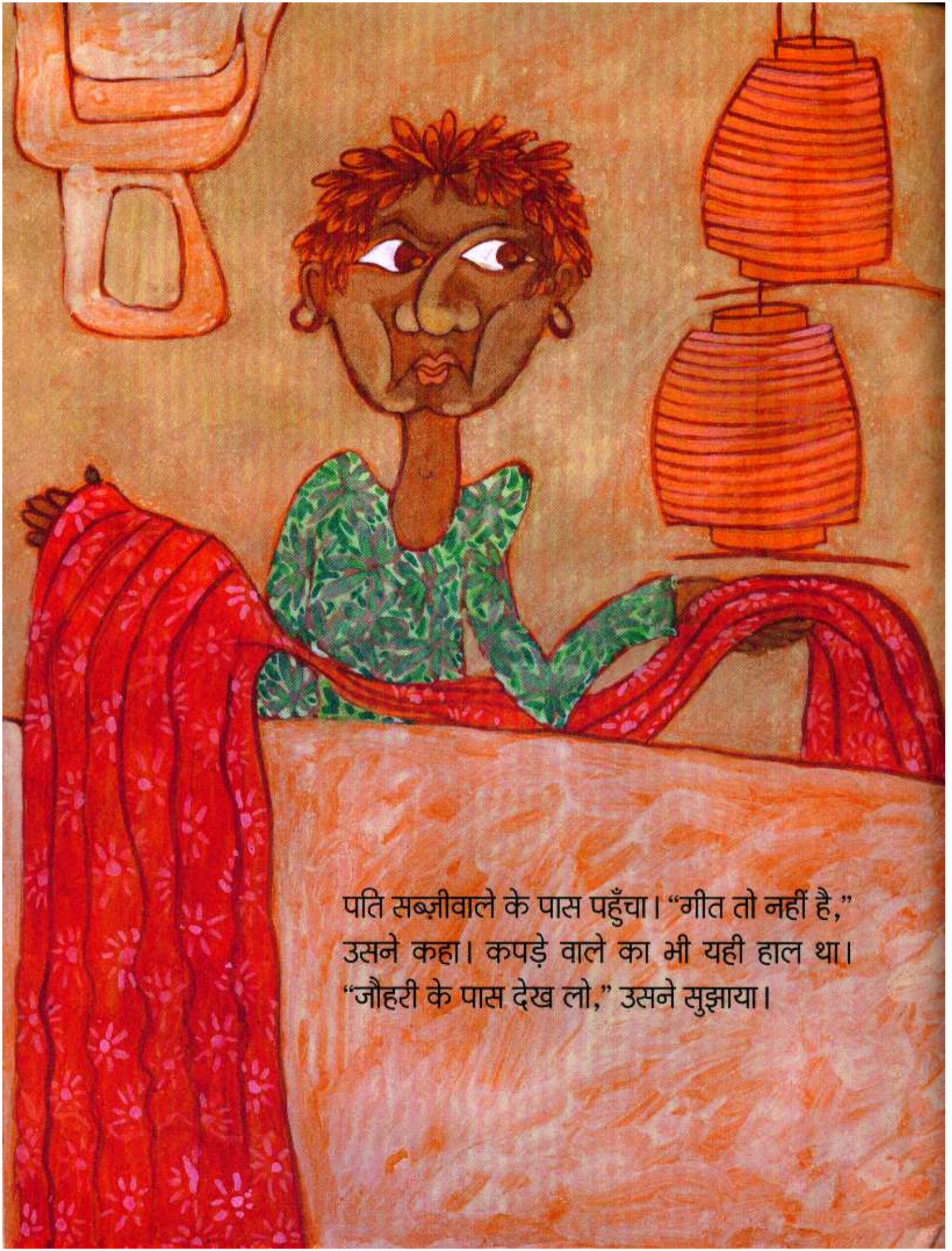

पति सब्ज़ीवाले के पास पहुँचा। "गीत तो नहीं है," उसने कहा। कपड़े वाले का भी यही हाल था। "जौहरी के पास देख लो," उसने सुझाया।

और इस तरह वह बेचारा सारी दोपहर एक दुकान से दूसरी दुकान भटकता रहा पर एक भी गीत नहीं खरीद सका। आखिरकार वह दुखी मन से घर की ओर लौटने लगा।

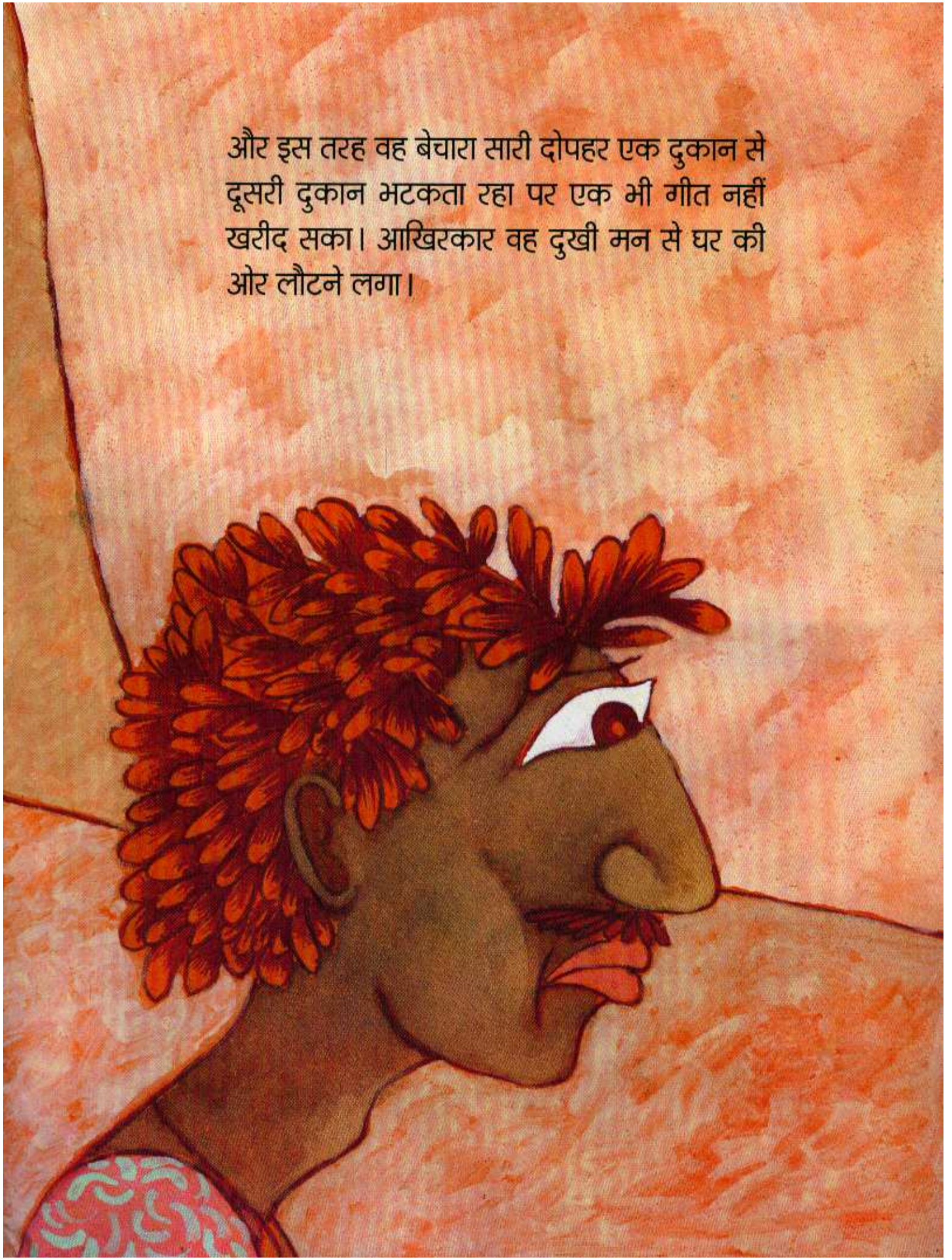

रास्ते में उसे एक बिल खोदता चूहा दिखा। इससे उसके मन में एक विचार आया। "मैं खुद ही एक गीत बना लेता हूँ जिसमें यह चूहा होगा," उसने सोचा और हो गया शुरू:

खोदे खरड़-खरड़

अपनी इस जुगत से खुश होकर वह गाता हुआ चल पड़ा:

खोदे खरड़-खरड़,
खोदे खरड़-खरड़

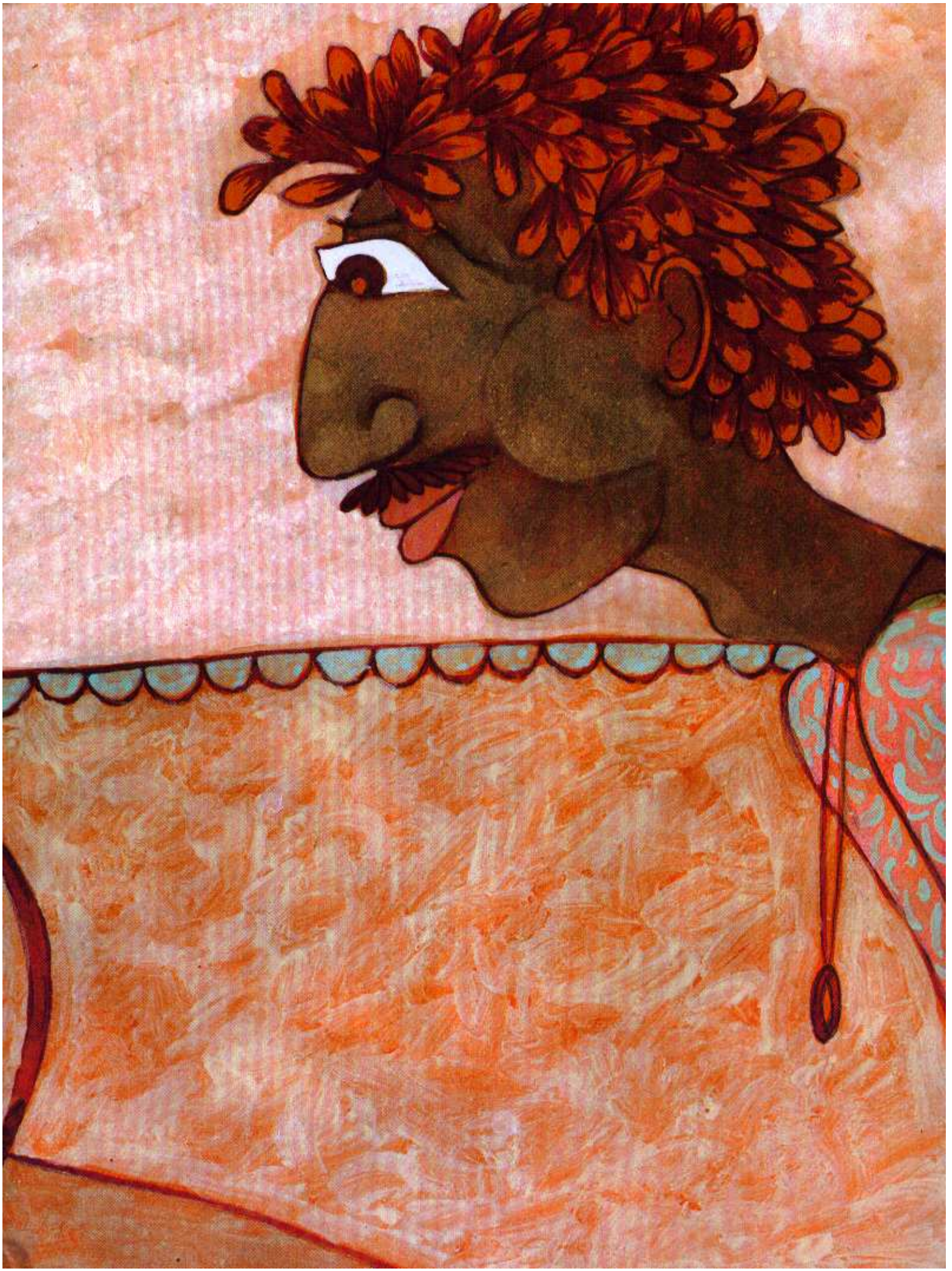

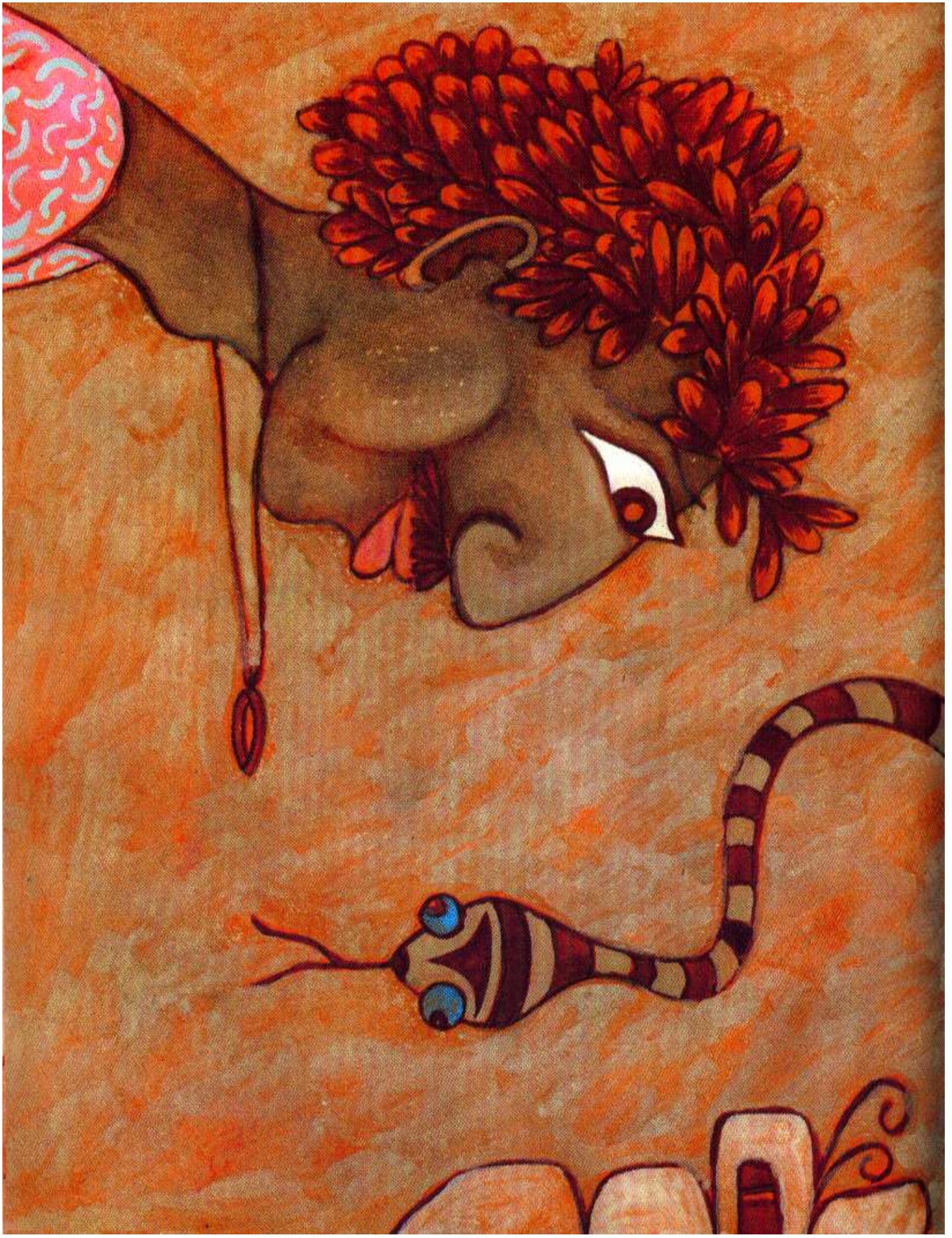

आगे उसे एक साँप रेंगता हुआ दिखाई दिया
और उसने गीत में जोड़ा:

सरके सरर-सरर।

अब वह गर्व से गाता चला:

खोदे खरड़-खरड़
सरके सरर-सरर

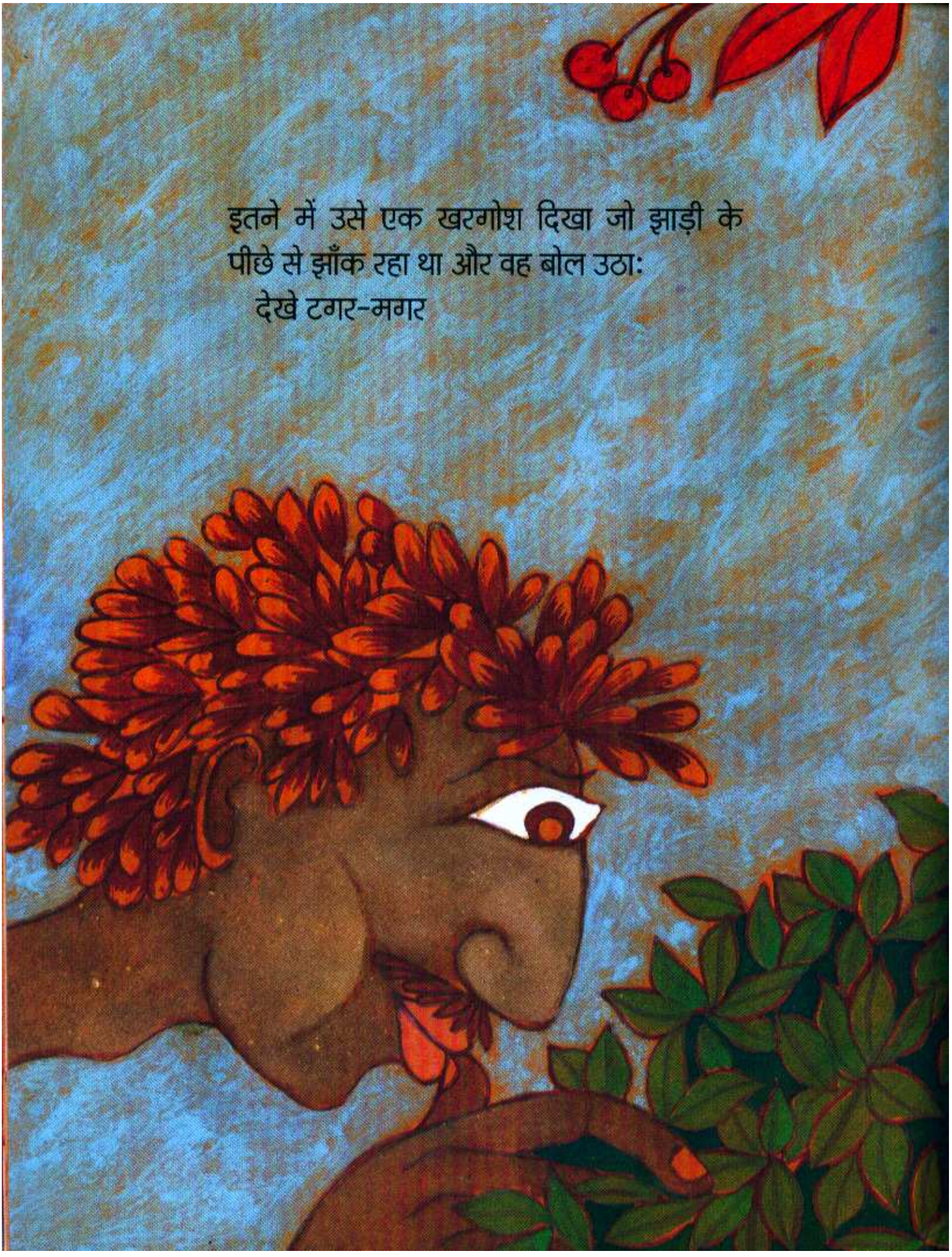

इतने में उसे एक खरगोश दिखा जो झाड़ी के
पीछे से झाँक रहा था और वह बोल उठा:
देखे टगर-मगर

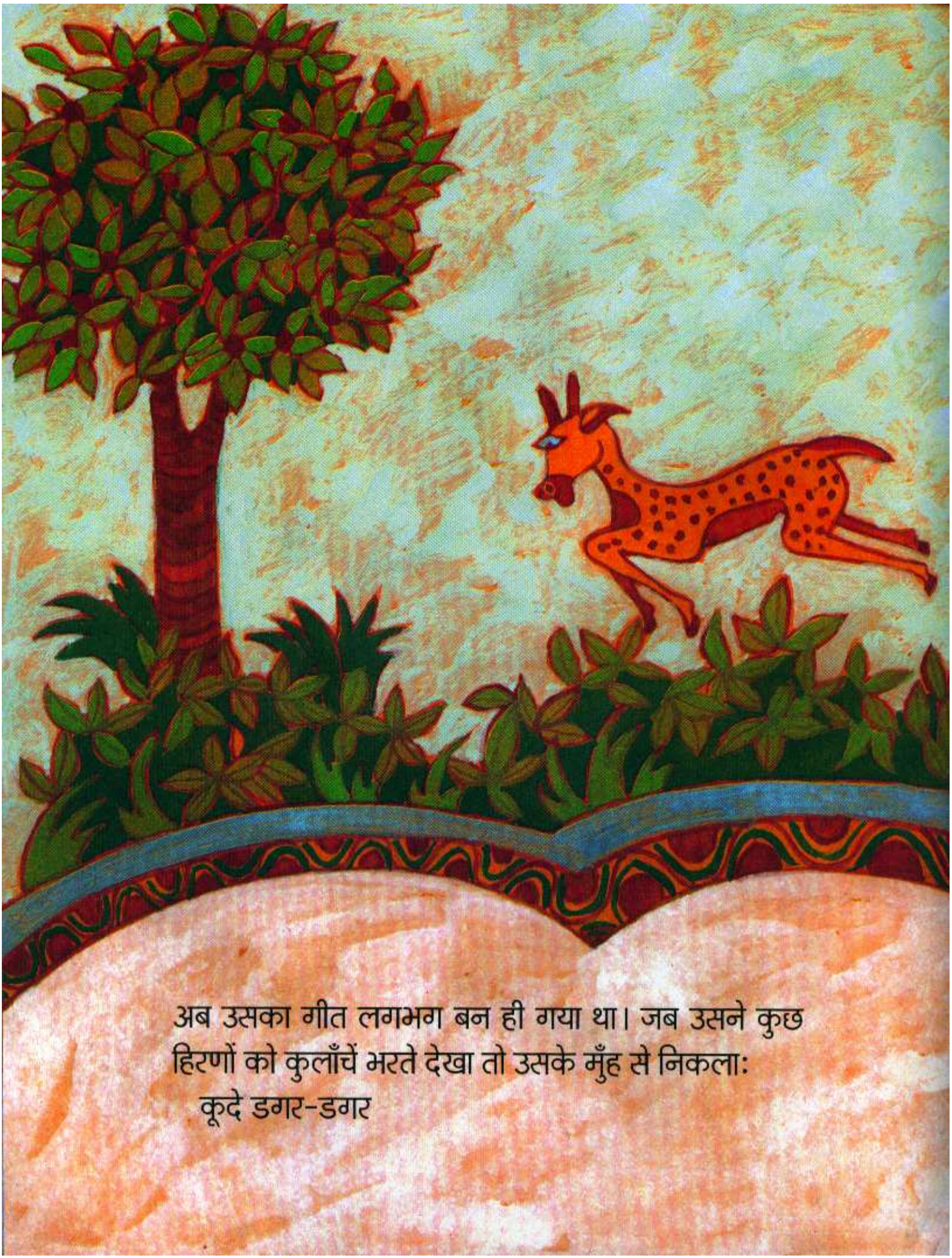

अब उसका गीत लगभग बन ही गया था। जब उसने कुछ
हिरणों को कुलाँचें भरते देखा तो उसके मुँह से निकला:

कूदे डगर-डगर

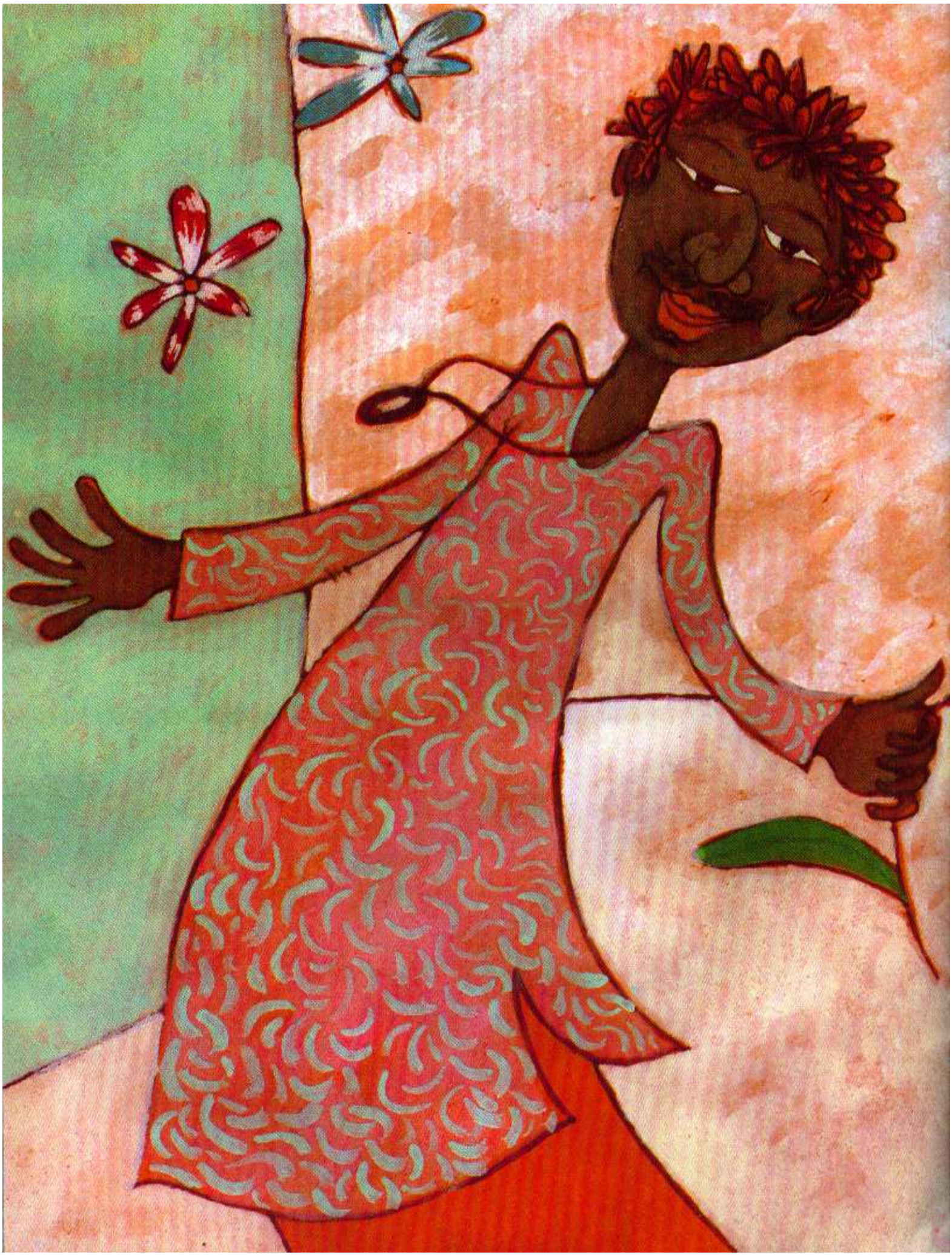

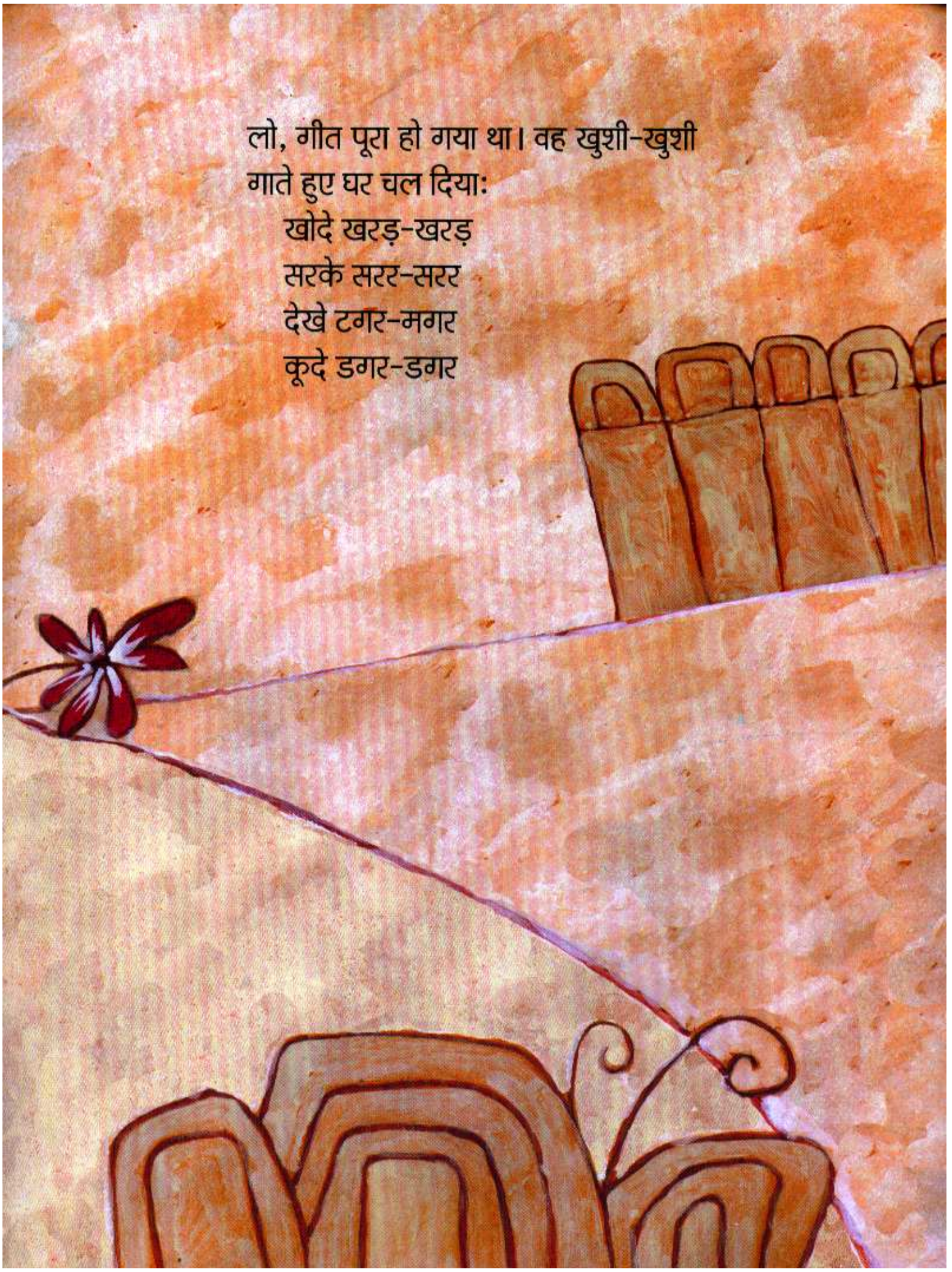

लो, गीत पूरा हो गया था। वह खुशी-खुशी
गाते हुए घर चल दिया:

खोदे खरड़-खरड़
सरके सरर-सरर
देखे टगर-मगर
कूदे डगर-डगर

घर लौटकर उसने गीत अपनी पत्नी को सुनाया और बोला, "बाज़ार का सबसे महँगा गीत है यह।" वह बड़ी खुश हुई और उसने तुरन्त गाना शुरू कर दिया। उसका पति तो सो गया पर वह गाती रही।

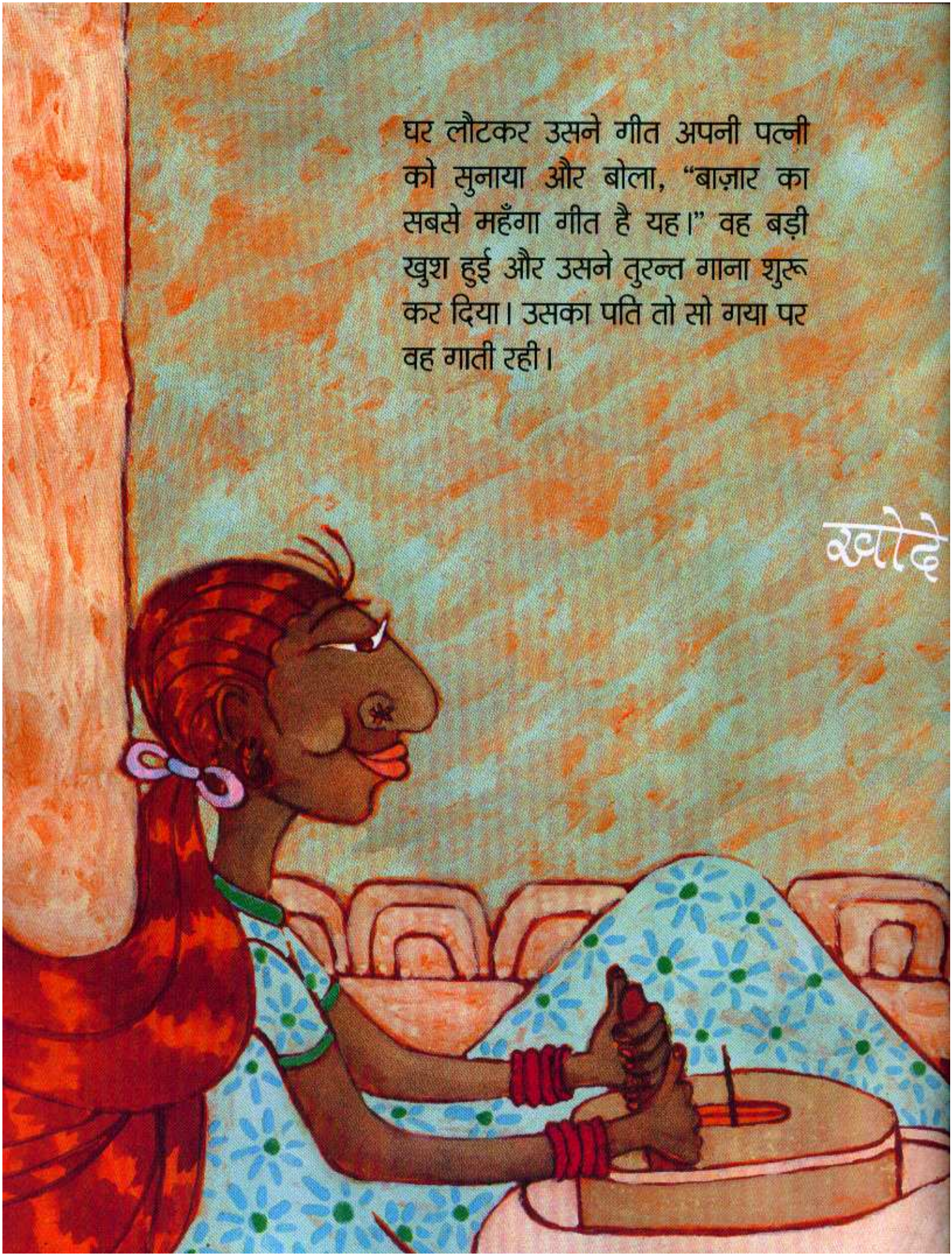

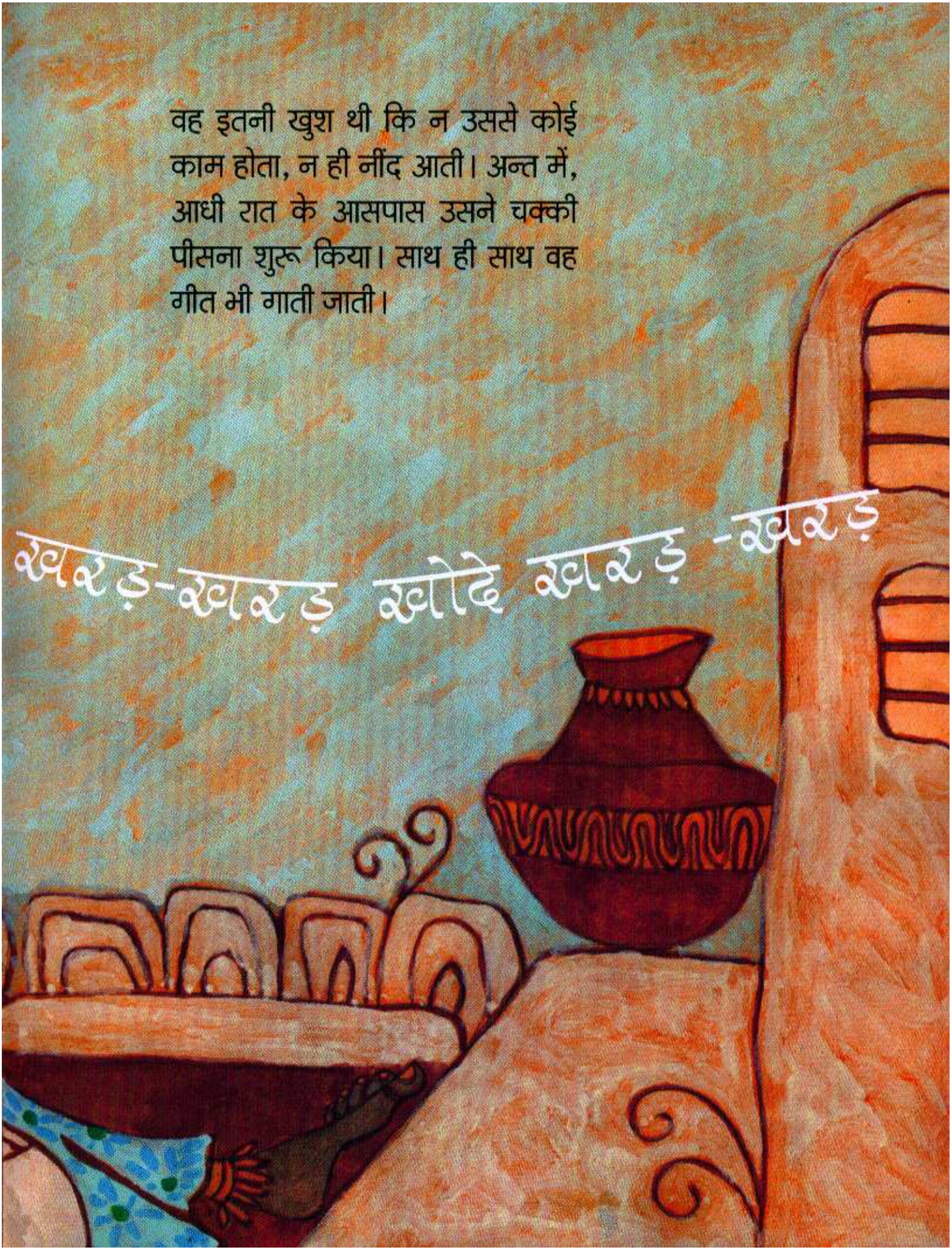
वह इतनी खुश थी कि न उससे कोई
काम होता, न ही नींद आती। अन्त में,
आधी रात के आसपास उसने चक्की
पीसना शुरू किया। साथ ही साथ वह
गीत भी गाती जाती।
खरड़-खरड़ खोदे खरड़ -खरड़

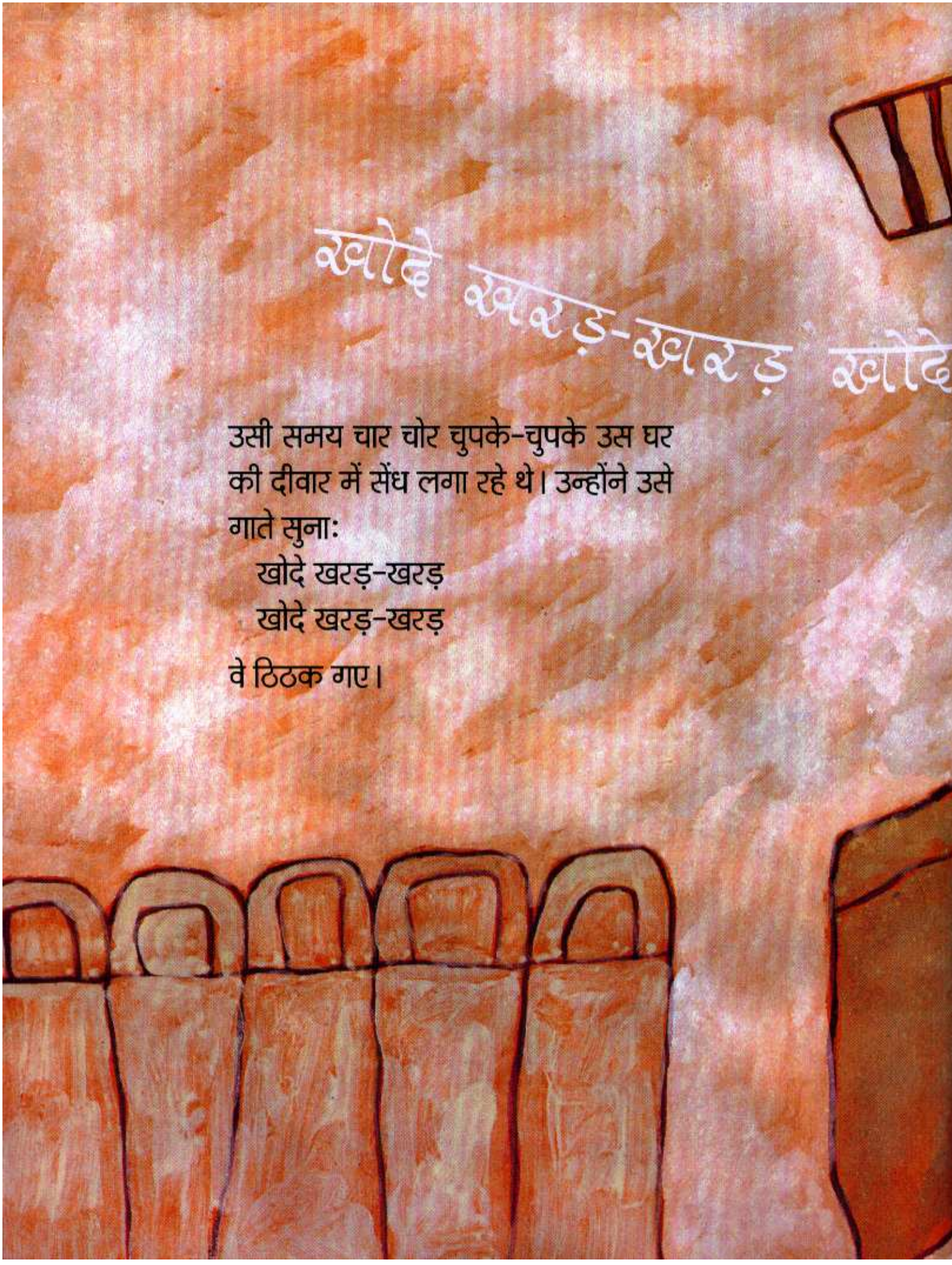

उसी समय चार चोर चुपके-चुपके उस घर की दीवार में सेंध लगा रहे थे। उन्होंने उसे गाते सुना:

खोदे खरड़-खरड़
खोदे खरड़-खरड़

वे ठिठक गए।

खरड़ - खुरड़

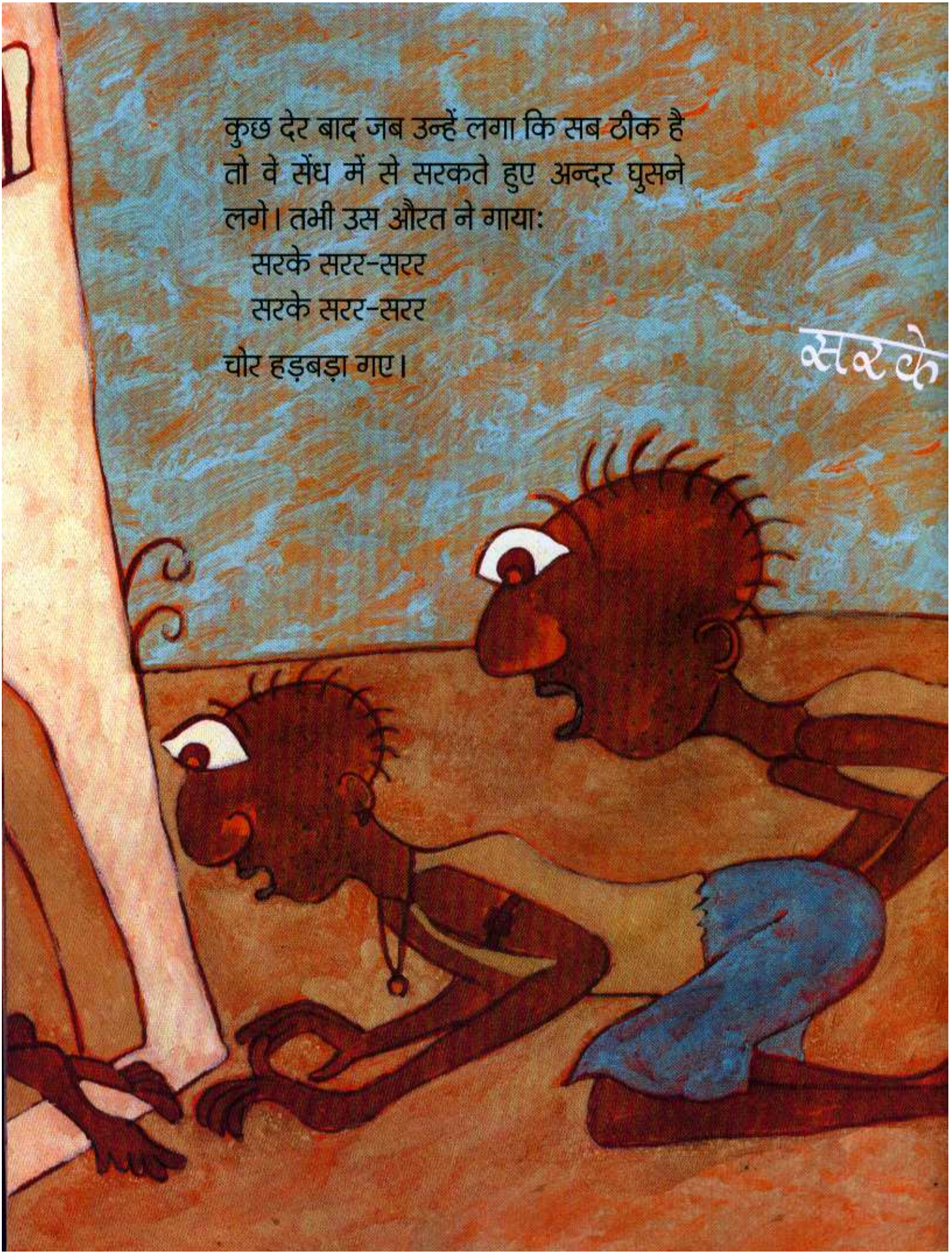

कुछ देर बाद जब उन्हें लगा कि सब ठीक है
तो वे सेंध में से सरकते हुए अन्दर घुसने
लगे। तभी उस औरत ने गाया:

सरके सरर-सरर
सरके सरर-सरर

चोर हड़बड़ा गए।

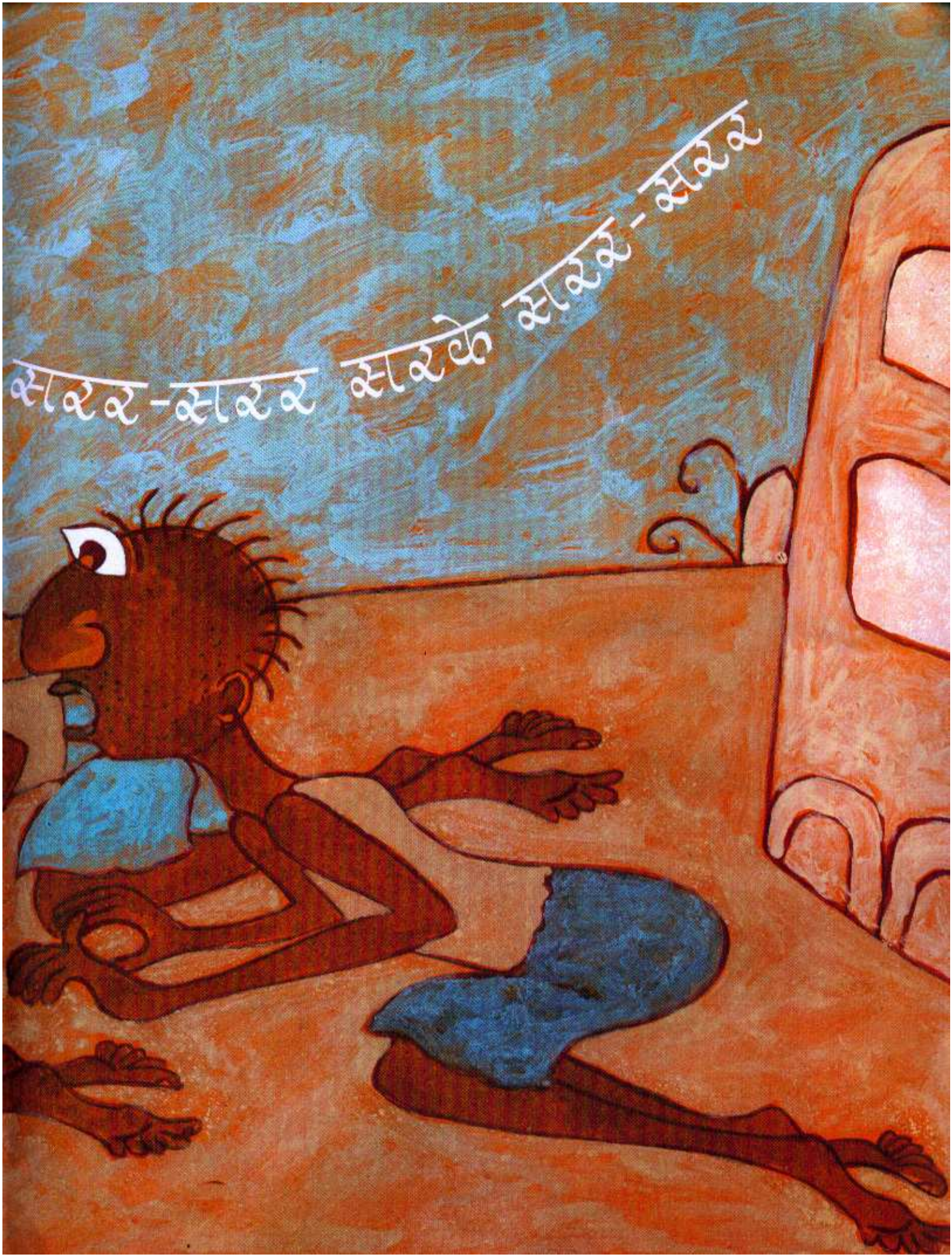

सारर-सारर सारके सरर-सरर

"औरत को कैसे मालूम कि हम अन्दर घुस रहे हैं!" घबराकर वे इधर-उधर देखने लगे।

दूसरी तरफ औरत गाने में मगन थी:

देखे टगर-मगर
देखे टगर-मगर

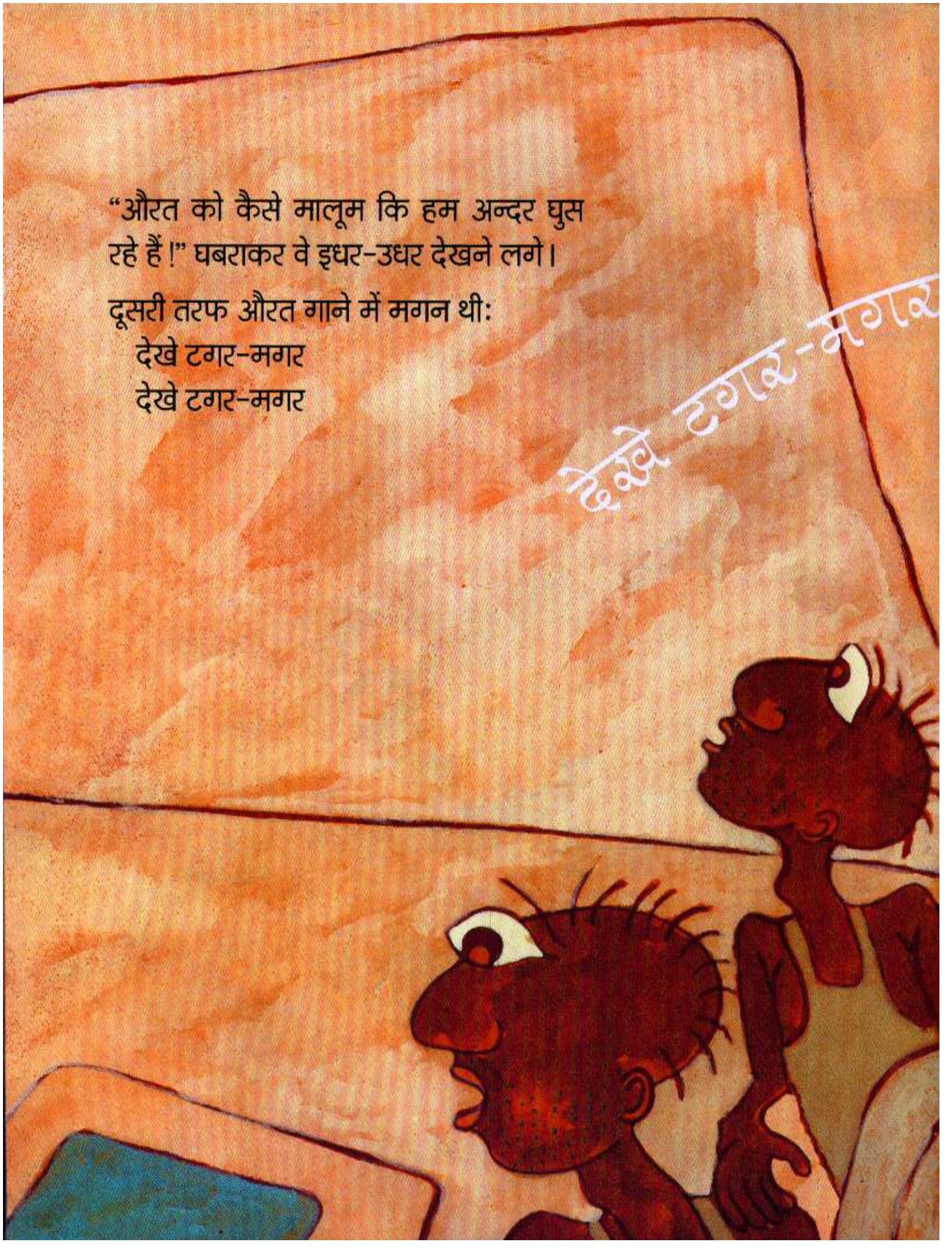

देखे टगर-मगर

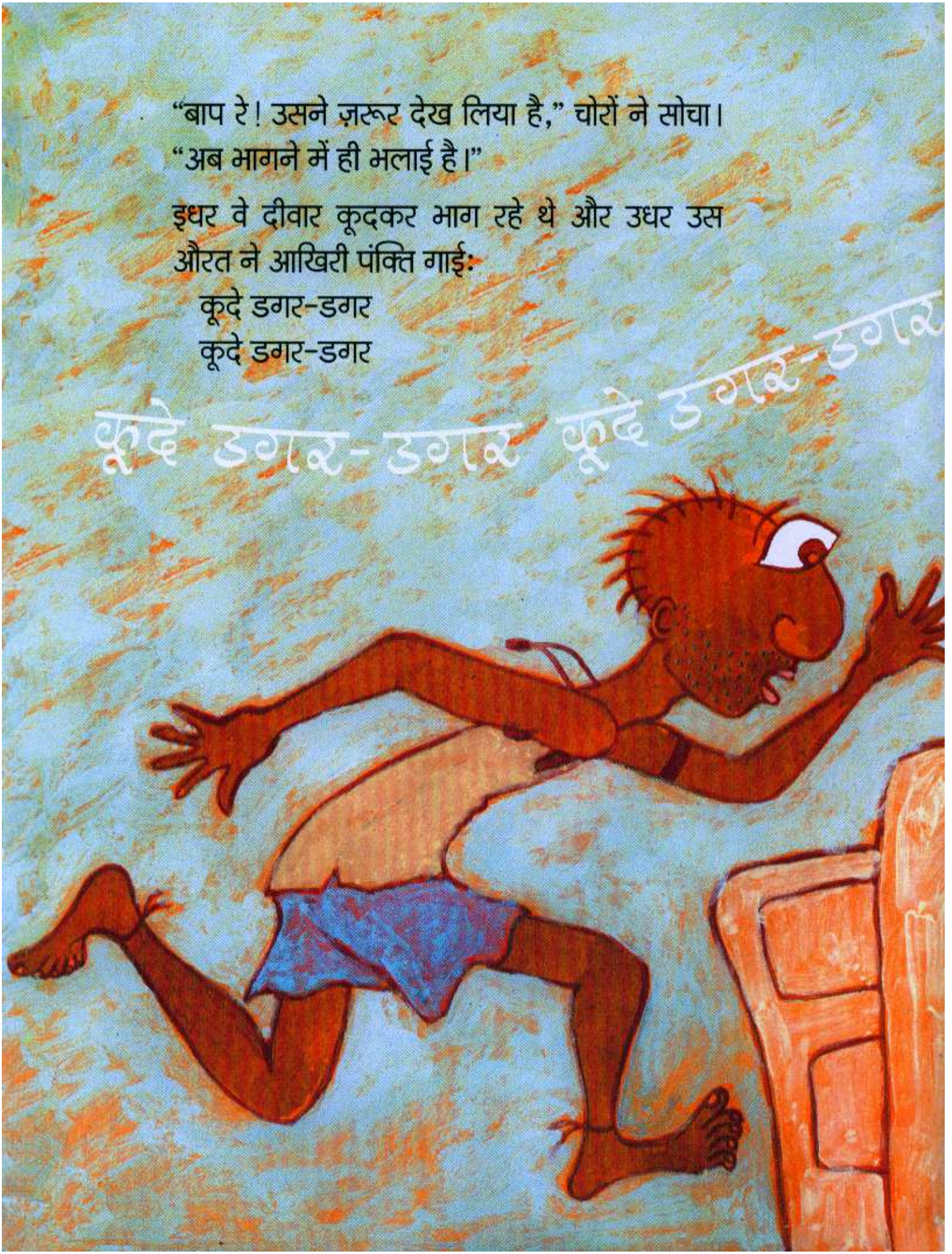

"बाप रे! उसने ज़रूर देख लिया है," चोरों ने सोचा। "अब भागने में ही भलाई है।"

इधर वे दीवार कूदकर भाग रहे थे और उधर उस औरत ने आखिरी पंक्ति गाई:

कूदे डगर-डगर
कूदे डगर-डगर

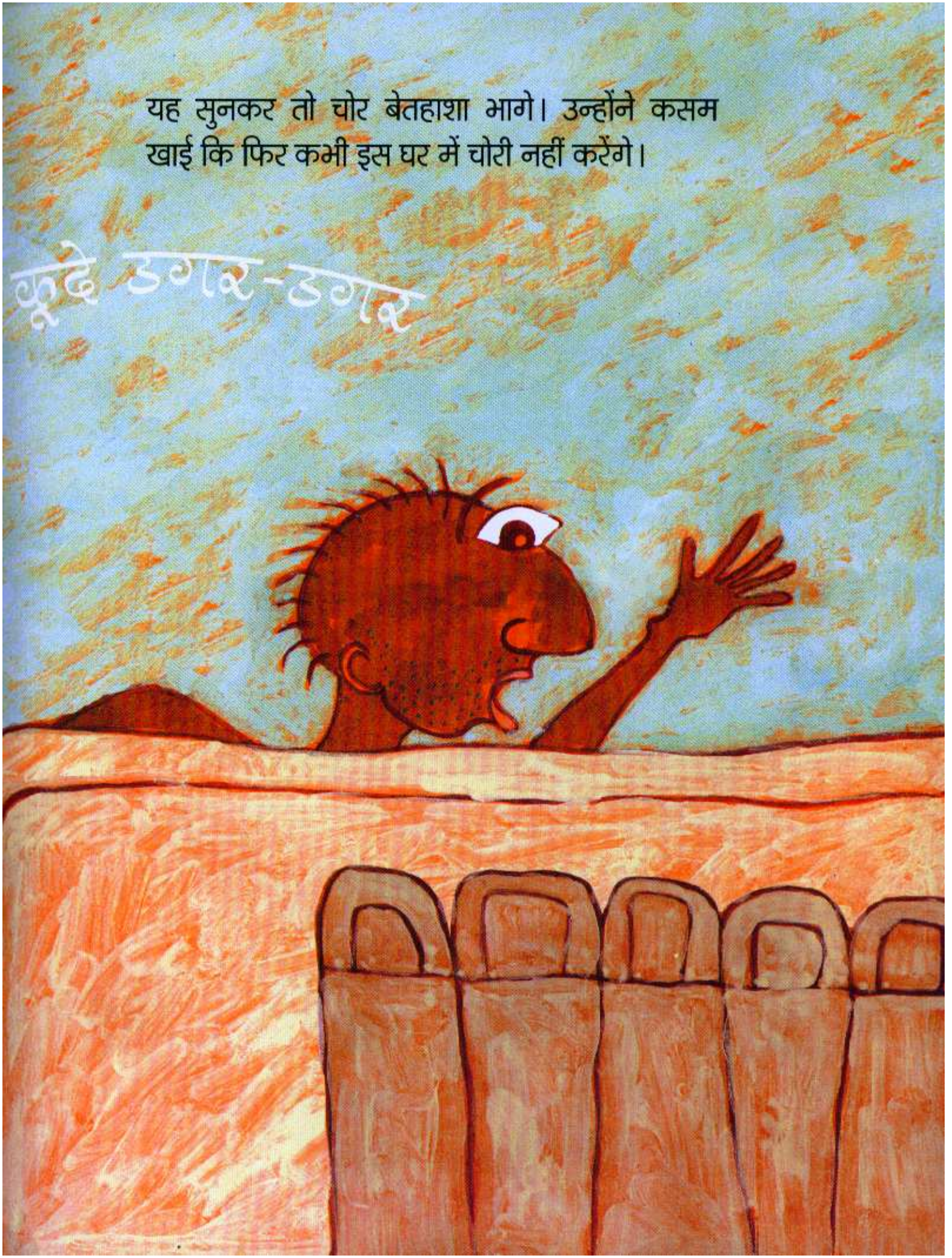
यह सुनकर तो चोर बेतहाशा भागे। उन्होंने कसम
खाई कि फिर कभी इस घर में चोरी नहीं करेंगे।
कूदे डगर-डगर

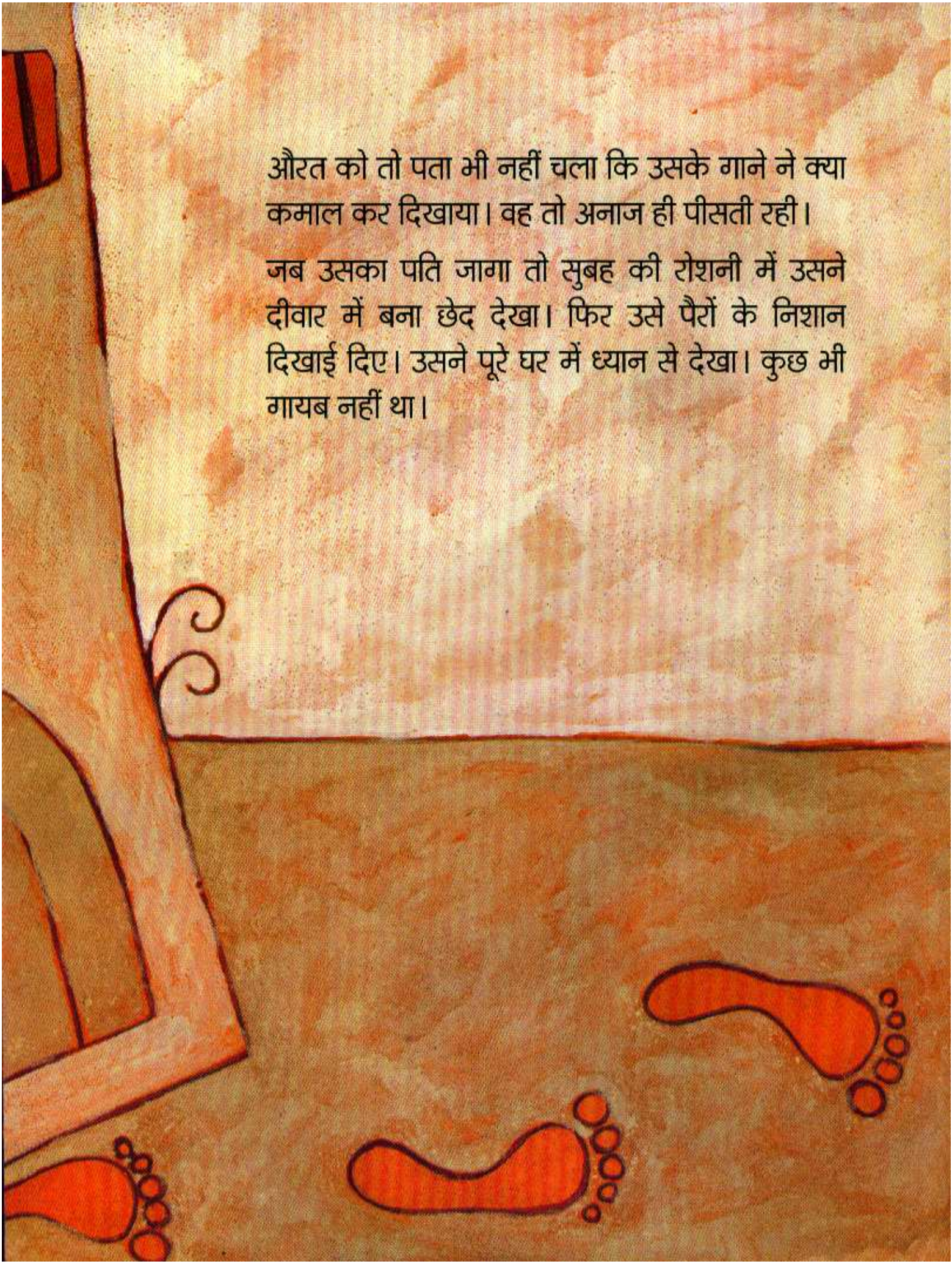

औरत को तो पता भी नहीं चला कि उसके गाने ने क्या कमाल कर दिखाया। वह तो अनाज ही पीसती रही।

जब उसका पति जागा तो सुबह की रोशनी में उसने दीवार में बना छेद देखा। फिर उसे पैरों के निशान दिखाई दिए। उसने पूरे घर में ध्यान से देखा। कुछ भी गायब नहीं था।

उसने अपनी पत्नी से पूछा, "कल रात तुम क्या कर रही थी? लगता है हमारे यहाँ कुछ बिन-बुलाए मेहमान आए थे।"

"ओह! मुझे तो कुछ पता ही नहीं चला," पत्नी ने कहा। "मैं तो रात भर उस गीत का रियाज़ करती रही जो तुम लाए थे।"

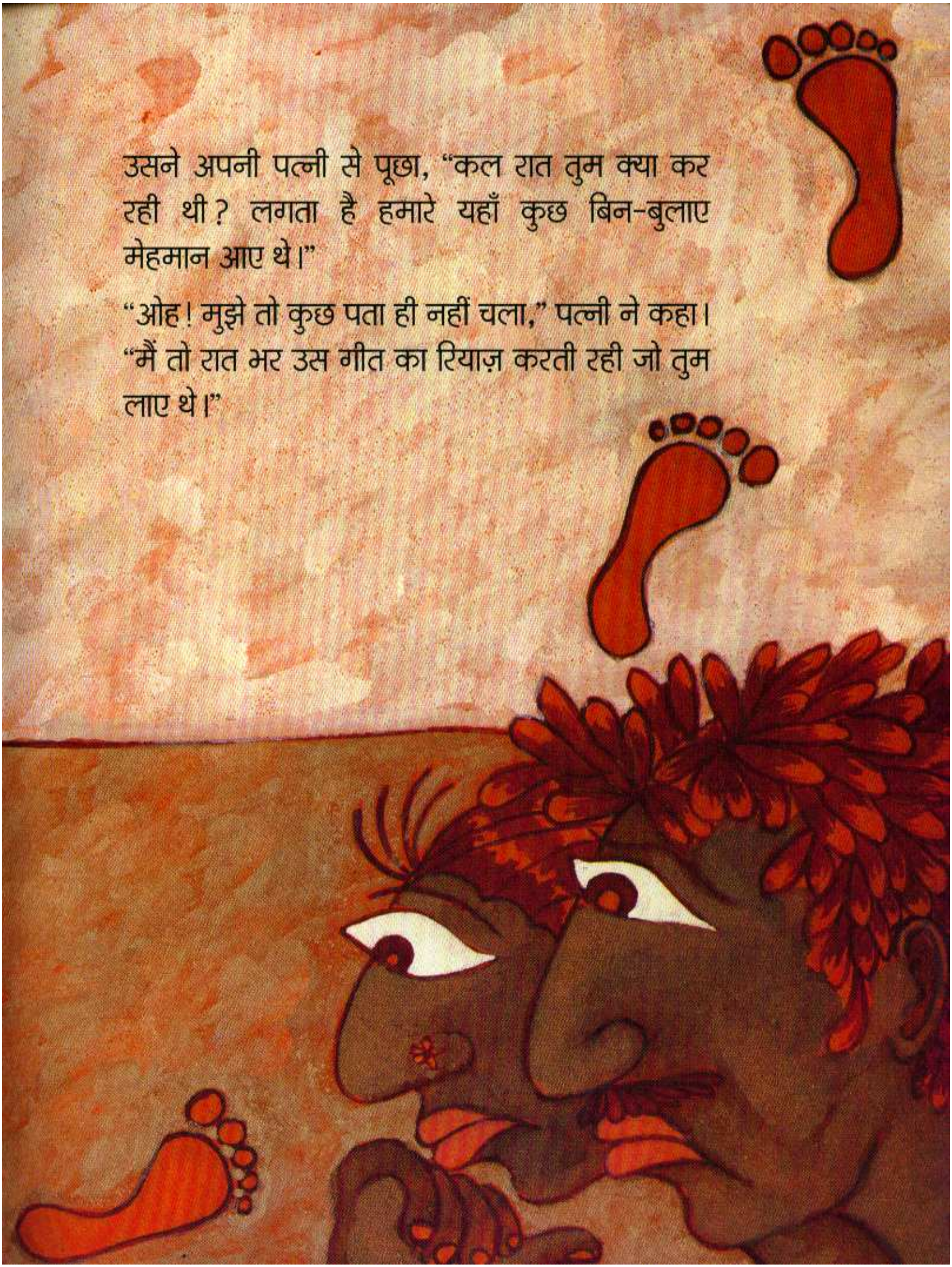

"वाह!" पति ने गर्व से कहा, "लगता है यह वाकई कमाल का गीत है। उसने चोरों को भगा दिया।"

औरत मुस्कुरा दी। उसने कहा, "कितनी बढ़िया बात है! तुम सचमुच मेरे लिए सबसे अच्छा गीत लाए हो।"

दोनों ने चाय बनाकर पी और पूरे गाँव को बताने चल दिए कि सही वक्त पर सही गीत गाने से कैसा कमाल हो सकता है!

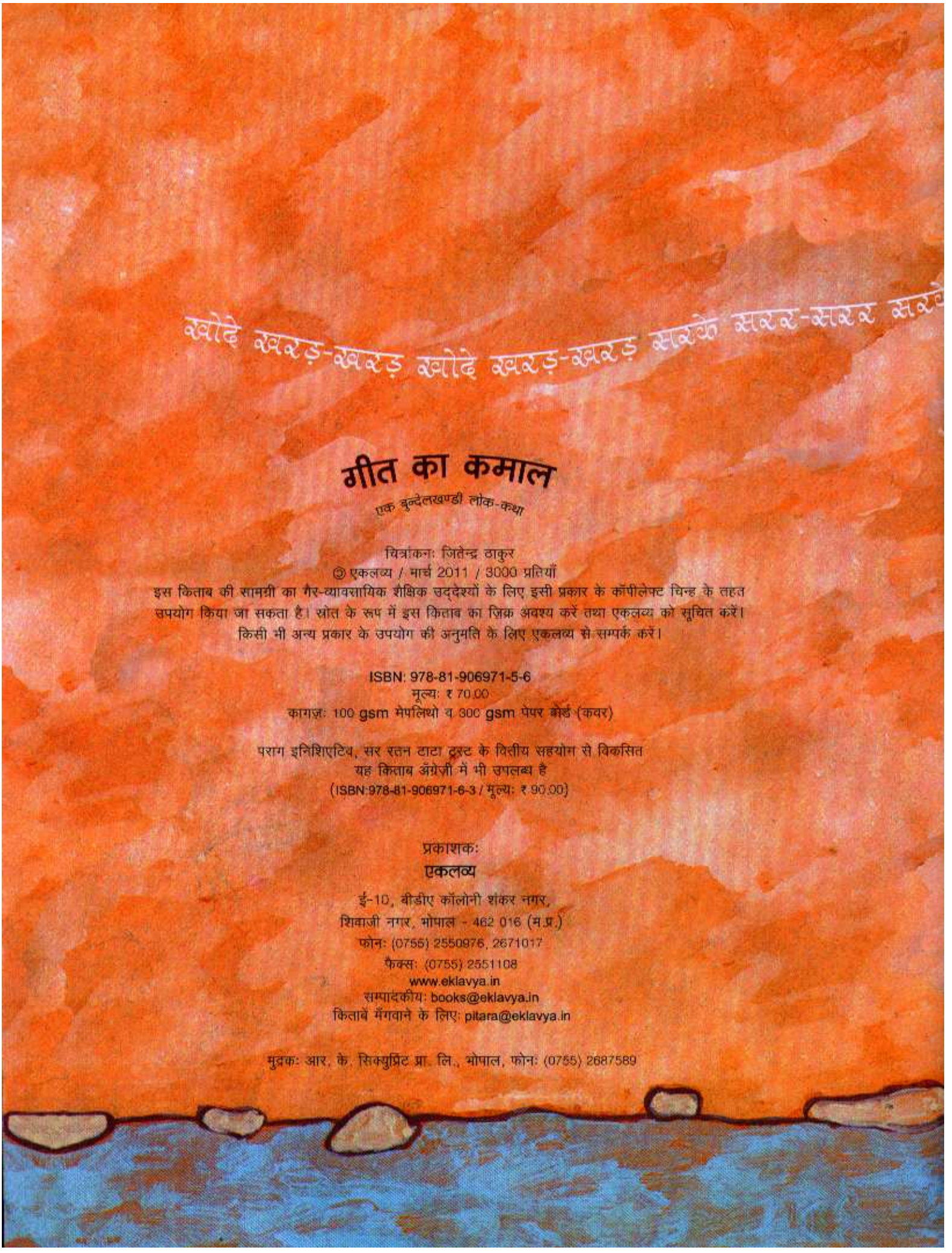

खोदे खरड़-खरड़ खोदे खरड़-खरड़ सरके सरर-सरर सरके

गीत का कमाल

एक बुन्देलखण्डी लोक-कथा

चित्रांकनः जितेन्द्र ठाकुर
© एकलव्य / मार्च 2011 / 3000 प्रतियाँ
इस किताब की सामग्री का गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए इसी प्रकार के कॉपीलेफ्ट चिन्ह के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में इस किताब का ज़िक्र अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें।
किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग की अनुमति के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

ISBN: 978-81-906971-5-6
मूल्यः ₹ 70.00
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 300 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है
(ISBN:978-81-906971-6-3 / मूल्यः ₹ 90.00)

प्रकाशकः
एकलव्य

ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 2550976, 2671017
फैक्सः (0755) 2551108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोनः (0755) 2687589

जितेन्द्र ठाकुर युवा चित्रकार हैं व एकलव्य भोपाल में कार्यरत हैं। उन्हें बच्चों के लिए चित्रकारी करना बहुत प्रिय है। वे प्रकृति के सौन्दर्य को अपने रंगों के ज़रिए महसूस करने का प्रयास करते हैं।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) और बिहार में पटना स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016

एक गाँव में एक औरत परेशान है। क्यों? - क्योंकि उसे कोई गीत नहीं आता। तो शुरू होती है गीत के लिए भागा-दौड़ी। आखिर उसे एक गीत मिल ही जाता है। और क्या कमाल का गीत!

मिला कैसे और गीत ने क्या कमाल दिखाया? यह तुम्हें किताब के अन्दर पता चलेगा।

एकलव्य

मूल्य: ₹ 70.00

ISBN: 978-81-906971-5-6

9 788190 697156

parag SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित